National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
**NJHSR 2025;** 1(59): 215-218
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

**प्रभात कुमार**
सहायक प्राध्यापक,
चीनी विभाग,
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय

**Correspondence:**
**प्रभात कुमार**
सहायक प्राध्यापक,
चीनी विभाग,
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय

# चीनी इंडोलॉजिस्टों के यात्रा-लेखों में भारतीय सभ्यता

**प्रभात कुमार**

**सारांश**

भारत की विश्व में एक बहुत ही अनोखी और विशेष पहचान है। चीनी इंडोलॉजिस्टों के यात्रा-लेखों में भारतीय सभ्यता का चित्रण, विशेष रूप से चीनी साहित्य में और सामान्य रूप से चीन में, भारत की छवि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस शोध-पत्र के माध्यम से आधुनिक चीनी यात्रा साहित्य में भारतीय सभ्यता के चित्रण का विश्लेषण प्रस्तुत किया जायेगा। इसमें तीन चीनी इंडोलॉजिस्टों की चयनित यात्रा-कृतियाँ शामिल हैं, जिन्होंने सीमा युद्ध के पश्चात भारत-चीन संबंधों की पुनर्स्थापना के बाद के विभिन्न काल खण्डों में भारत का भ्रमण किया और उसका चित्रण किया। ये चीनी इंडोलॉजिस्ट हैं — ची श्येनलिन (Ji Xianlin), श्वे कछियाओ(Xue Keqiao) और मंग चाओयी (Meng Zhaoyi)। यह शोध-पत्र यह जानने का प्रयास करेगा कि इन यात्रा-वृतांतों में भारतीय सभ्यता का किस प्रकार चित्रण किया गया है। चीनी यात्रियों की भारत यात्रा ज्ञान और शिक्षा की खोज के उद्देश्य से की गई थी। इसके अतिरिक्त, उनके कार्यों की एक सामान्य विशेषता यह रही है कि उन्होंने भारतीय सभ्यता को एक रहस्यमय, विविध और अद्वितीय संरचना के रूप में प्रस्तुत किया है। चीनी इंडोलॉजिस्टों ने भारत के गौरवशाली अतीत की महानता और विश्व की दो प्राचीन सभ्यताओं के बीच प्राचीन संबंध को भी मान्यता दी है।

**प्रस्तावना**

भारतीय सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है। मूलतः, भारतीय समाज और संस्कृति की विशेषताएँ ही इसकी सभ्यतागत यात्रा के केंद्र में रही हैं। भारतीय सभ्यता का प्रतिनिधित्व केवल देश की आधुनिक सीमाओं के भीतर सीमित संस्कृति ने नहीं किया है, बल्कि यह उस विशाल भूखंड की संस्कृति द्वारा किया गया है, जो चीन के पश्चिम, मध्य एशिया के दक्षिण और फारस के पूर्व में स्थित था।

भारतीय ज्ञान परंपराएं और भारतीय मूल्य प्रणाली मुख्य रूप से मौखिक परंपरा (श्रुति और स्मृति) पर आधारित थी। इसके विपरीत, चीन में इतिहास को लिपिबद्ध करने और ज्ञान के संप्रेषण का माध्यम साहित्यिक कृतियाँ रही हैं। इसी परम्परा कि तहत, आधुनिक चीनी यात्रियों ने भी अपने लेखों में भारतीय संस्कृति और सभ्यतागत मूल्यों पर विचार किया और उनका वर्णन किया। स्वतंत्रता के पश्चात् उपनिवेशोत्तर युग और अखिल-एशियाई एकता की भावना के प्रभाव में भारत और चीन के बीच बहुआयामी पक्षों पर आदान-प्रदान का एक नया चरण प्रारंभ हुआ। चीन के लेखकों, विद्वानों, विशेषज्ञों, सांस्कृतिक दूतों आदि के लिए सांस्कृतिक और अकादमिक आदान-प्रदान का एक प्रमुख केंद्र भारत बन गया था। उन्होंने मैत्रीपूर्ण संवाद को बढ़ावा दिया। उन्होंने अपनी यात्राओं का लेखा-जोखा तैयार किया तथा यात्रा के दौरान भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का बारीक़ से बारीक़ अवलोकन कर चित्रित किया। हलांकी 1962 ई. के सीमा युद्ध के पश्चात बगड़ी परिस्थितियों में, भारत की यात्रा कर उसे चीन में पुनः प्रस्तुत करने की कड़ी में चीनी इंडोलॉजिस्ट की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। उन्होंने भारत तथा भारतीयता की छवि गढ़ने और उसे आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय संस्कृति की

विशिष्टता को समझने और उसे प्रस्तुत करने की क्षमता चीनी इंडोलॉजिस्टों के चित्रण को अन्य यात्रियों के चित्रण से अलग बनाती है। इसलिए, चीनी इंडोलॉजिस्टों के यात्रा-लेखों में भारत और भारतीय सभ्यता का एक अनूठा दृष्टिकोण दिखाई पड़ता है।

चीनी इंडोलॉजिस्टों के कार्यों की एक सामान्य विशेषता यह रही है कि उन्होंने भारतीय सभ्यता को एक रहस्यमय, विविधतापूर्ण और विशिष्ट संरचनाओं के समन्वय के रूप में प्रस्तुत किया है। वहीं, चीनी इंडोलॉजिस्टों ने भारत के गौरवशाली अतीत की महानता और विश्व की इन दो सभ्यताओं के प्राचीन संबंध को भी मान्यता दी है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने चीनी सभ्यता पर भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रभाव को भी रेखांकित किया है। इसी संदर्भ में, यह लेख निम्नलिखित तीन शीर्षकों के अंतर्गत इस विषय का विश्लेषण प्रस्तुत करता है: 1) भारतीय सभ्यता: एक रहस्यमय, विविधतापूर्ण और विशिष्ट संरचना, 2) प्राचीन भारतीय सभ्यता और भारत-चीन संबंधों की पहचान और 3) चीनी सभ्यता पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव।

## भारतीय सभ्यता: एक रहस्यमय, विविधतापूर्ण और विशिष्ट संरचना

भारत ऐतिहासिक रूप से चीनी यात्रियों के लिए ज्ञान और शिक्षण का एक प्रमुख केंद्र क्यों रहा है — इसका उत्तर चीनी इंडोलॉजिस्ट श्वे कछियाओ की यात्रा-लेख में स्पष्ट रूप से मिलता है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि चीन से भिन्न जीवनदृष्टि और संसार को देखने के लिए चीनी लोगों को हिमालय पार करना चाहिए। उन्होंने भारत की यात्रा करने और उसकी सभ्यता में स्वयं को डुबोने के महत्त्व को रेखांकित करते हुए लिखा है कि:

"एक चीनी व्यक्ति के रूप में, यदि आप चीन के परे के दृश्य देखना चाहते हैं, विविध सांस्कृतिक वातावरण का अनुभव करना चाहते हैं — तो मैं आपको सलाह देता हूं कि आप हिमालय पार करें और भारत जाएं। यदि आप जीवन और ब्रह्मांड के रहस्यों की खोज करना चाहते हैं, तो मैं सुझाव देता हूं कि आप हिमालय पार करें और भारत जाएं। यदि आप भौतिक इच्छाओं का त्याग करना चाहते हैं और आत्मा को शांत करना चाहते हैं — तो मैं फिर कहूंगा कि आप हिमालय पार करें और भारत जाएं।"[1]

श्वे कछियाओ ने अपनी यात्रा-लेख में चीनियों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया है: "एक, जो भारत आ चुके हैं, और दूसरे, जो नहीं आए हैं।"[2] जो व्यक्ति भारत नहीं आया है, वह इसे रहस्यमय मानता है, क्योंकि उसे देश और इसकी विशेषताओं की सीमित जानकारी और अनुभव होता है। जबकि जो व्यक्ति भारत आया है, वह इसे इसकी गहराई और अप्रत्याशितता के कारण रहस्यमय मानता है। इसलिए, गहराई और अप्रत्याशितता को राष्ट्रीय विशेषताओं के रूप में देखा जाए तो ये भारतीय सभ्यता को रहस्यमय रूप में प्रस्तुत करने के महत्त्वपूर्ण तत्त्व बन जाते हैं।

मंग चाओयी ने भी अपने यात्रा वृतान्त में भारत के इसी विशेषताओं को रेखांकित किया है। उन्हें भारत एक अद्‌भुत स्थान लगा जो रहस्यमयता और आश्चर्यजनक घटनाओं से भरा हुआ है। उन्होंने लिखा है कि — "भारत — इसकी संस्कृति की विविधता, जीवन की जटिलता, धर्मों की विविधता, समाजों का सह-अस्तित्व, और जीवन के विरोधाभास — हमेशा से विश्व के लिए आश्चर्य का स्रोत रहा है, जिससे लोगों के लिए इसे समझना कठिन हो जाता है।"[3] मंग चाओयी उन लोगों की तरफ़ इशारा करना चाहते हैं जो भारतीय सभ्यता के संस्कृति को समझे बिना इसकी यात्रा करते हैं। भारत के सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्य में अंतर्विरोधी प्रतीत होने वाले तत्वों का सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व प्रायः विदेशी पर्यवेक्षकों को आश्चर्य और भ्रम की स्थिति में डाल देता है।

"विविधता", "जटिलता", "सह-अस्तित्व" और "विरोधाभास" भारत को आश्चर्य का स्रोत इसीलिए बनता है क्यूँकि जीवन के ये आयाम, अन्य संस्कृतियों में देखने में नहीं आते हैं। भाषाओं, वेशभूषाओं, खान-पान, समुदायों, विचारधाराओं, धार्मिक रीति-रिवाजों की विविधता तथा उनके परस्पर सहिष्णुता और समावेशिता की विशेषताएँ हीं भारतीय संस्कृति को रहस्मय और अतुल्य बनाती है। इसी आधार पर, उन्होंने भारत को "ऐसे समुदाय के रूप में वर्णित किया जो बहुलता [के सिद्धांत] से बना है, जैसे बहु-जाति, बहु-नस्ल, बहु-धर्म, बहु-शैली।[4] मंग चाओयी लिखते हैं:

संस्कृति की धार्मिकता और धर्मनिरपेक्षता का सुंदर समन्वय है। कला में खुलापन और परंपरागतता एक-दूसरे में घुले-मिले हैं। हिंदू धर्म में तपस्या और भोग-विलास दोनों का सह-अस्तित्व प्रायः देखा जाता है। व्यक्तिगत आध्यात्मिकता और सांसारिक लक्ष्यों का संगम भी अक्सर एक ही व्यक्ति में निहित होता है। भारतीय समाज की सहजीवी व्यवस्था में यह "सह-अस्तित्व" की घटना, पर्यावरण के प्रभावों के प्रति व्यक्तियों की एक सक्रिय प्रतिक्रिया है। इसे मानव के व्यक्तिपरक दृष्टिकोण से समायोजित किया जा सकता है और यह मूलतः भारतीय समाज की पारिस्थितिक संतुलन व्यवस्था है।

इसलिए, यह देखना कठिन नहीं है कि जहाँ भारतीय समाज सतही रूप से अशांत प्रतीत होता है, वहीं भारतीयों का अंतर्मन शांत रहता है; चारों ओर गंदगी और अव्यवस्था है, फिर भी व्यक्ति स्वच्छता को प्राथमिकता देता है; अमीर और गरीब के बीच गहरा अंतर होते हुए भी लोग मानसिक संतुलन बनाए रखते हैं; मनुष्य और पशु के बीच सह-अस्तित्व सौहार्दपूर्ण है—जैसे कि कूबड़ वाली गायें सड़कों पर घूमती हैं, कुत्ते पैरों के नीचे सोए रहते हैं, और चूहे खुलेआम इधर-उधर घूमते हैं। यह सारे विरोधाभासी प्रतीत होने वाले दृश्य बाहरी लोगों की दृष्टि को उलझा देते हैं, जिससे वे भारतीय समाज के सार को स्पष्ट रूप से देख नहीं पाते, और अंततः यह अनुभव करते हैं कि भारत को वास्तव में समझना आसान नहीं है।[5]

मंग चाओयी भारतीय जीवन, समाज, धर्म और संस्कृति को विविधता और विभिन्न तत्वों के सौहार्दपूर्ण सह-अस्तित्व से युक्त एक

जटिल ताने-बाने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे मानते हैं कि भारत आज भी एक रहस्य बना हुआ है, और इसे एक "अनसुलझी पहेली" के रूप में वर्णित करते हैं, जो निरंतर भ्रम और आश्चर्य की भावना को जन्म देती है।[6]

इसी प्रकार, श्वे कछियाओ भी भारतीय संस्कृति के "विशिष्ट" और "रहस्यमय" पक्षों को रेखांकित करते हैं। उनके अनुसार, भारत से जुड़ी रहस्यात्मकता और विशिष्टता का बड़ा हिस्सा इसके धार्मिक परंपराओं और विशेष रूप से हिंदू धर्म में निहित धार्मिक आचरणों से उत्पन्न होता है। श्वे का तर्क है कि भारत की गहन समझ हिंदू धर्म की गहरी समझ के बिना संभव नहीं है, जिसे वे अत्यंत आवश्यक और साथ ही चुनौतीपूर्ण भी मानते हैं।[7]

यह निर्विवाद सत्य है कि भारत की सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संरचनाओं की आधारशिला विविधता, जटिलता और बहुलता पर आधारित है। विविधता में एकता, जटिलता में सहजता तथा बहुलता में समरसता की अवधारणा भारतीय संस्कृति का मूल तत्त्व है, जो उसकी सभ्यतागत चेतना की गहराई को प्रतिबिंबित करती है। ये विशेषताएँ न केवल भारतीय अस्मिता की केन्द्रीय पहचान हैं, बल्कि इन्हें भारत की राष्ट्रीय विशिष्टता के रूप में भी गौरव के साथ प्रतिष्ठित किया गया है—जो उसे समृद्ध, विविधरंगी एवं रहस्यात्मक बनाती है।

**<u>प्राचीन भारतीय सभ्यता के प्रति प्रशंसा और भारत-चीन के ऐतिहासिक संबंधों की स्वीकृति</u>**

भारत को निरंतर एक प्राचीन सभ्यता के रूप में चित्रित किया गया है, जो तीन हजार वर्षों से भी अधिक पुराने सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों की गहरी जड़ों वाली विरासत का प्रतीक है। मंग चाओयी भारत को "मानवता के लिए एक आध्यात्मिक तीर्थ, पूर्वी सभ्यता की जन्मभूमि और एक दीर्घ एवं प्राचीन इतिहास वाला देश" बताते हैं।[8] भारत और चीन —दोनों प्राचीन सभ्यताएँ— अपने गौरवशाली अतीत की नींव पर आज भी विकसित हो रही हैं। थान चुंग के अनुसार, ये दोनों सभ्यताएँ दो भिन्न सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की प्रतिनिधि हैं: भारत "मंदिर संस्कृति" का और चीन "महल संस्कृति" का प्रतीक है।[9] इन सभ्यताओं की विविध विशेषताओं ने आपसी संवाद, साझा सीख और सौहार्दपूर्ण संबंधों के मार्ग को प्रशस्त करने में अहम भूमिका निभायी है।

भारत-चीन संबंधों की अप्रतिम प्राचीनता, एक और कारण है कि पद्म भूषण जी श्येनलिन जैसे विद्वान इन दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों को अत्यंत सम्मान के साथ देखते हैं। अपने यात्रा-लेख में वह लिखते हैं कि भारत और चीन के बीच की प्राचीन सभ्यतागत निकटता "हम दोनों देशों के लोगों के लिए गर्व का विषय है"।[10] वह यह भी रेखांकित करते हैं कि अतीत में हुई सभ्यतागत आदान-प्रदान और विद्वानों, विशेषतः बौद्ध धर्म के विद्वानों, के बीच की सहभागिता आधुनिक भारत-चीन संबंधों की अटूट नींव है। अतः, भले ही इन संबंधों में एक संक्षिप्त "अप्रिय"[11] दौर आया हो, फिर भी आज के द्विपक्षीय संबंध उन गहरे भावनात्मक और ऐतिहासिक जुड़ावों से प्रभावित हैं जो इन दोनों महान सभ्यताओं की साझा विरासत में निहित है।

**<u>भारत की सभ्यता का चीन पर प्रभाव</u>**

भारत को विश्व में एक विशिष्ट सभ्यता के रूप में देखा गया है। प्राचीन काल से ही इसे एक समृद्ध आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत वाले क्षेत्र के रूप में पहचाना जाता रहा है। भारतीय सभ्यता, विशेष रूप से बौद्ध परंपरा, का प्रभाव इतना व्यापक था कि भारत को विश्व-गुरु की संज्ञा दी गयी। चीनी दार्शनिक और विद्वान हू शिर (Hu Shi) ने अपने लेख "यिन्तु वू शिर" [भारत — हमारा गुरु] में इस तथ्य को स्वीकार किया है।[12] उन्होंने भारत को "पश्चिमी स्वर्ग" की संज्ञा दी, क्यूँकि उनका मानना था कि भारत से हीं "समस्त प्रकाश, आशीर्वाद और प्रेरणा" चीन में आई थी।[13] वे प्राचीन भारत के महत्व और प्रभाव के बारे में निरंतर लिखते रहे, जिसे उन्होंने ज्ञान सृजन का केंद्र बताया। उन्होंने लिखा, "भारत से जो कुछ भी आता था, वह पवित्र होता था। सैकड़ों श्रद्धालु विद्वान, जिनमें फा हिसएन (Fa Xian) और ह्स्वेन त्सांग (Xuan Zang) जैसे महान नाम शामिल हैं, ने अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए लंबे मार्ग तय किए ताकि वे भारत में किसी महान बौद्ध आचार्य के चरणों में अध्ययन कर सकें और कुछ पवित्र ग्रंथों को अनुवाद और अध्ययन हेतु वापस ले जा सकें"।[14] चीन के ऐतिहासिक ग्रंथों में यह प्रमाणित होता है कि बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ भारत से समृद्ध सामाजिक व्यवस्थाओं के अन्य पहलू भी चीन पहुंचे, और उन्होंने चीनी समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित किया। भारत खगोल विज्ञान, साहित्य, गणित, चित्रकला, संगीत और नृत्य जैसी भारतीय ज्ञान परंपराओं का चीन में निर्यातक रहा है।[15]

भारतीय सभ्यता का प्रभाव उसके पड़ोसी चीनी सभ्यता पर तुलनात्मक रूप से अधिक व्यापक, गहरा और दीर्घकालिक रहा है, विशेषकर परस्पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान के इतिहास में। अपनी यात्रा-लेख में, ची श्येनलिन ने लिखा:

"मैं इस मत से सहमत नहीं हूं कि चीन और भारत के बीच सांस्कृतिक संपर्क बुद्ध धर्म के आगमन के साथ शुरू हुए थे। दूसरे शब्दों में कहें तो, यह मानना कि चीन-भारत के बीच सांस्कृतिक संपर्क प्रथम सदी ईस्वी में शुरू हुए थे, मुझे उचित नहीं लगता। मेरा मानना है कि यह संपर्क उससे कहीं पहले, कम से कम क्षू यूएन (Qu Yuan) के काल— तीसरी और चौथी शताब्दी ईसा पूर्व—में शुरू हो चुका था। क्षू यूएन की रचना 'थिएनवन' में एक वाक्य आता है: 'कु थू पेट में है।' कुछ

लोग 'कु थू' का अर्थ 'मेंढक' बताते हैं, लेकिन हान राजवंश के विवरणों से पता चलता है कि इसे खरगोश के रूप में वर्णित किया गया है। चंद्रमा में खरगोश की यह पौराणिक कथा भारत में अत्यंत लोकप्रिय है।"[16]

यह सर्वविदित है कि चंद्रमा में खरगोश या शशक की प्राचीन कथा भारतीय लोककथाओं से जुड़ी एक प्रसिद्ध अवधारणा है। इसी कारण, जी श्येनलिन का मानना था कि "यह अत्यंत संभव है कि यह मिथक भारत में उत्पन्न हुआ हो और फिर चीन में आया हो तथा यूएन की रचना में दर्ज हुआ हो।" [17] यह विवरण न केवल इस बात का संकेत देता है कि इन दो सभ्यताओं के बीच संपर्क कम से कम 2300 वर्ष पहले स्थापित हो चुका था, बल्कि यह भी दर्शाता है कि प्राचीन काल से हीं भारतीय सभ्यता ने अन्य सभ्यताओं पर कितना गहरा प्रभाव डाला है।

**निष्कर्ष**

चीनी इंडोलॉजिस्टों का मानना है कि भारत एक ऐसा अध्ययन स्थल है जिसकी सभ्यतागत यात्रा अद्वितीय रही है, जो चीनी सभ्यता के विमर्श से भिन्न है। इस लेख में शामिल चीनी इंडोलॉजिस्टों ने सामान्यतः भारतीय सभ्यता की रहस्यपूर्ण, विविधतापूर्ण, गूढ़ और विशिष्ट प्रकृति को चित्रित किया है। उन्होंने यह भी विशेष रूप से रेखांकित किया कि भारत की इन अतुल्य विशेषताओं के निर्माण में हिंदू धर्म की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। यह विशिष्टता ही 'भारतीयता' है, जो भारत को विश्व के अन्य देशों से अलग पहचान प्रदान करती है।

यह स्पष्ट है कि भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्य-प्रणालियों में उपस्थित जटिलता और विविधता के कारण ही मंग चाओयी जैसे चीनी यात्रियों को भ्रम और उलझन का अनुभव हुआ। भारतीय संस्कृति को समझना और उसे अपनी भिन्न सामाजिक व सांस्कृतिक प्रणालियों से जोड़ना उनके लिए कठिन था, जिससे यह अनुभव और अधिक रहस्यमय बन गया। फिर भी, ची श्येनलिन, श्वे कछियाओ और मंग चाओयी जैसे इंडोलॉजिस्टों ने भारतीय सभ्यता और परंपरा के सार को ईमानदारी और गहराई से प्रस्तुत किया है। यह दर्शाता है कि उन्होंने एक तटस्थ और संतुलित दृष्टिकोण अपनाया, जो उनके अनुभव और भारत के प्रति उनके गहन अध्ययन का परिणाम है। इन लेखकों ने भारतीय सभ्यता को उच्च स्थान दिया और प्राचीन भारत-चीन सांस्कृतिक संबंधों की गौरवशाली गाथा को भी चित्रित किया है। यह यात्रा-वृतांत इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि प्राचीन भारतीय सभ्यता का चीन पर जो गहरा प्रभाव पड़ा है, उसे आधुनिक संबंधों के विमर्श में भी नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

**संदर्भ:**


1. श्वे, कछियाओ. (2010). षियांगपू लिंगखूँग: वो खान यिनतू [उत्साहपूर्ण हाथी: भारत मेरी नज़रों में]. बीजिंग: शिरचिए चिरशिर प्रकाशन, पृ.2
2. श्वे, कछियाओ. (2010). षियांगपू लिंगखूँग: वो खान यिनतू [उत्साहपूर्ण हाथी: भारत मेरी नज़रों में]. बीजिंग: शिरचिए चिरशिर प्रकाशन, पृ.64
3. मंग, चाओयी. (2013). पु ख़ सयी द यिनतू [अतुल्य भारत]. चाओयी मंग, लूँग यू यू, श्वेन चू (सम्पादक), थिएन चू चिषिंग: यू लूँग यू, मंग चाओयी ष्वेशू चिर लू [भारत की यात्रा: एक अकादमिक यात्रा]. बीजिंग: बीजिंग विश्विद्यालय प्रकाशन, पृ.5
4. मंग, चाओयी. (2013). पु ख़ सयी द यिनतू [अतुल्य भारत]. चाओयी मंग, लूँग यू यू, श्वेन चू (सम्पादक), थिएन चू चिषिंग: यू लूँग यू, मंग चाओयी ष्वेशू चिर लू [भारत की यात्रा: एक अकादमिक यात्रा]. बीजिंग: बीजिंग विश्विद्यालय प्रकाशन, पृ.8
5. मंग, चाओयी. (2013). पु ख़ सयी द यिनतू [अतुल्य भारत]. चाओयी मंग, लूँग यू यू, श्वेन चू (सम्पादक), थिएन चू चिषिंग: यू लूँग यू, मंग चाओयी ष्वेशू चिर लू [भारत की यात्रा: एक अकादमिक यात्रा]. बीजिंग: बीजिंग विश्विद्यालय प्रकाशन, पृ.8
6. मंग, चाओयी. (2013). पु ख़ सयी द यिनतू [अतुल्य भारत]. चाओयी मंग, लूँग यू यू, श्वेन चू (सम्पादक), थिएन चू चिषिंग: यू लूँग यू, मंग चाओयी ष्वेशू चिर लू [भारत की यात्रा: एक अकादमिक यात्रा]. बीजिंग: बीजिंग विश्विद्यालय प्रकाशन, पृ.5
7. श्वे, कछियाओ. (2010). षियांगपू लिंगखूँग: वो खान यिनतू [उत्साहपूर्ण हाथी: भारत मेरी नज़रों में]. बीजिंग: शिरचिए चिरशिर प्रकाशन, पृ.64-65
8. मंग, चाओयी. (2013). पु ख़ सयी द यिनतू [अतुल्य भारत]. चाओयी मंग, लूँग यू यू, श्वेन चू (सम्पादक), थिएन चू चिषिंग: यू लूँग यू, मंग चाओयी ष्वेशू चिर लू [भारत की यात्रा: एक अकादमिक यात्रा]. बीजिंग: बीजिंग विश्विद्यालय प्रकाशन, पृ.9
9. थान, छूँग. (2006). साइनो-इंडियन कल्चरल सिनर्जी: ट्वेंटी सेंचरीज़ ओफ सिवलिज़ेशन डाइयलोग [चीनी-भारतीय सांस्कृतिक समन्वय: बीस शताब्दियों का सभ्यतागत संवाद]. चाइना रिपोर्ट, 42(2), 121-128, पृ.124
10. ची, श्येनलिन. (2007). थिएन चू षिनयिंग [मेरे हृदय में भारत: भारत यात्रा की स्मृतियाँ]. थिएन चिन: पाए ह्वा वन यी प्रकाशन, पृ.019
11. ची, श्येनलिन. (2007). थिएन चू षिनयिंग [मेरे हृदय में भारत: भारत यात्रा की स्मृतियाँ]. थिएन चिन: पाए ह्वा वन यी प्रकाशन, पृ.019
12. हू, शिर. (2013). इंगलिश राईटिंग्स ओफ हू शिर: चाईनिज फ़िलासफ़ी एंड इंटेलेक्चुएल हिस्ट्री [ हू शिर की अंग्रेज़ी रचनाएँ: चीनी दर्शन और बौद्धिक इतिहास], सी चौ (सम्पादक), संस्करण 2, स्प्रिंजर, 187-188
13. हू, शिर. (2013). इंगलिश राईटिंग्स ओफ हू शिर: चाईनिज फ़िलासफ़ी एंड इंटेलेक्चुएल हिस्ट्री [ हू शिर की अंग्रेज़ी रचनाएँ: चीनी दर्शन और बौद्धिक इतिहास], सी चौ (सम्पादक), संस्करण 2, स्प्रिंजर , पृ.96
14. हू, शिर. (2013). इंगलिश राईटिंग्स ओफ हू शिर: चाईनिज फ़िलासफ़ी एंड इंटेलेक्चुएल हिस्ट्री [ हू शिर की अंग्रेज़ी रचनाएँ: चीनी दर्शन और बौद्धिक इतिहास], सी चौ (सम्पादक), संस्करण 2, स्प्रिंजर , पृ.96
15. श्वे, कछियाओ, (1998) चूंग यिन वन ह्वा चीयाओ ल्यो शिर ह्वा [भारत-चीन सांस्कृतिक संवाद का ऐतिहासिक विवरण]. शांग वू यिन शू क्वान प्रकाशन
16. ची, श्येनलिन. (2007). थिएन चू षिनयिंग [मेरे हृदय में भारत: भारत यात्रा की स्मृतियाँ]. थिएन चिन: पाए ह्वा वन यी प्रकाशन, पृ.018
17. ची, श्येनलिन. (2007). थिएन चू षिनयिंग [मेरे हृदय में भारत: भारत यात्रा की स्मृतियाँ]. थिएन चिन: पाए ह्वा वन यी प्रकाशन, पृ.019